साहित्य में नारी का स्थान एवं भूमिका

प्रो. वडगे वृषाली रंगनाथ
(हिंदी विभाग)
महाराजा सयाजीराव गायकवाड कला, विज्ञान
एवं वाणिज्य महाविद्यालय मालेगाँव कैंप, नाशिक
मोबाईल नंबर. 9156073445
Emai| ID – vrusha|iwadge@gmai|.com

शोध सारांश :

हिंदी साहित्य में नारी को विशेष महत्व दिया गया हैं । नारी जीवन को हिंदी साहित्य के अंतर्गत बहुत ही विशेष रूप से प्रस्तुत किया हैं । मनुष्य के जीवन में नारी का स्थान बेहद जटिल और विशिष्ट कहा जाता हैं । वर्तमान युग में महिला सशक्तिकरण को अधिक महत्व प्राप्त होता दिखाई दे रहा हैं, आज नारी को सबका केंद्र माना जा सकता हैं । साहित्य के क्षेत्र में नारी विशेष चिंतन का बन गई हैं तथा नारी जीवन पर काफी मात्रा में लेखन किया गया हैं । आज की नारी देवी और जगत जननी से मुक्त होकर एक मानवीय रूप में समाज में स्थान चाहती है, उसे अपने अधिकार प्राप्त हो तथा वह स्वयं निर्णय ले सके । स्त्री की वास्तविक लड़ाई नारी मुक्ति हैं, क्योंकि वह आज भी अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए परंपरागत मूल्यों से लड़ रही हैं । किंतु धीरे–धीरे समय परिवर्तित होते हुए स्त्री आत्मनिर्भर बन रही हैं । वह हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर विकास की राह पर चल रही हैं । समाज को आगे बढ़ाने में स्त्री अर्थात नारी का महत्वपूर्ण स्थान हैं । हमारी संस्कृति पुरुष–प्रधान होने के कारण नारी को पहले विशेष महत्व प्राप्त नहीं था । पुरुषों द्वारा बनाए गए मूल्यों पर उसका मूल्यांकन किया जाता था । नारी को हम कई रूपों में देख सकते हैं, जैसे सीता, जो पुरुष–प्रधान व्यवस्था को पूर्णतः स्वीकार कर किसी प्रश्न पर आवाज नहीं उठाती और दूसरी ओर द्रौपदी हैं जो अपने स्वाभिमान का परिचय देती है और अपने समक्ष सभी बुद्धिजीवों से प्रश्न पूछती हैं ।

बीज शब्द– नारी, सशक्तीकरण, दलित, साहित्य, उपन्यास आदि ।

आंबेडकर जी ने कहा हैं की, 'नारी दलितों में भी दलित हैं' अर्थात दलितों के अधिकार छीनकर केवल कर्तव्य शेष रहा, उसी प्रकार स्त्री को भी केवल कर्तव्य करने के लिए बाध्य होना आवश्यक होता था । उसके अपने अधिकार तक शेष नहीं रहे थे । महात्मा ज्योतिबा फुले इन्होंने स्त्रियों के लिए शिक्षा के दरवाजे खोल दिए, इससे उनका स्वाभिमान उभरने लगा । स्त्री अपने जीवन को नई दृष्टि से देखने लगी । इन सभी बातों को देखते हुए साहित्य के अंतर्गत स्त्रियों के जीवन को किस प्रकार लिखा गया है, यह जानना आवश्यक हैं ।

चाक (उपन्यास) : मैत्रेयी पुष्पा अपने व्यक्तिगत जीवन और लेखन में पुरुष प्रधान समाज से सीधे–सीधे टक्कर लेती हैं । जो स्त्री को समानता के हक से वंचित करते हैं, ऐसे समाज की जड़ों को उखाड़कर फेंक देना चाहती हैं । चाक उपन्यास की रेशम अपने फौजी पति कर्मवीर को बेहद प्यार करती हैं और पूर्ण रूप से न्योछावर थी । रेशम के माध्यम से लेखिका नए नैतिक मूल्यों की स्थापना करती हैं । रेशम अपने जेठ से विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार करके नैतिकता के उच्च मानदण्डो का अनुसरण करती हैं । रेशम निर्भीक साहसी और नैतिक गुणों से संपन्न है । रेशम की क्रांतिकारी सोच उसकी हत्या का कारण बन जाती हैं । महिलाओं के

पक्ष में समाज में बुनियादी बदलाव वाले विचारों के लिए रेशम जैसी स्त्री को बलिदान देना ही पड़ेगा मगर ऐसे बलिदान व्यर्थ नहीं जाते ।

एक पत्नी के नोट्स (उपन्यास) : यह उपन्यास ममता कालिया का एक महत्वपूर्ण उपन्यास हैं । नारी जीवन को केंद्र में रखकर लिखे गए इस उपन्यास में पुरुष के रूप में मानसिकता को उजागर करने का प्रयास किया गया हैं । समाज पुरुषप्रधान होने के कारण पुरुष ये चाहता हैं, कि स्त्री उसके अनुरूप ही बर्ताव करें । इस उपन्यास से लेखिका का यह उद्देश्य हैं, कि स्त्री जीवन के व्यक्तिगत और लंबे तथा जानलेवा संघर्ष को अभिव्यक्ति देना । इस उपन्यास में लेखिका ने निम्न मध्यवर्गीय सुशिक्षित सुसंस्कृत नारी के मानसिकता का बड़ी सूक्ष्मता से चित्रण किया हैं । इस उपन्यास में एक सुशिक्षित पुरुष की रुग्न मानसिकता दिखाई गई हैं । पति अपने अहंकार अक्खड़पन तथा उच्चताबोध से पत्नी को नीचा दिखाता हैं और उसकी प्रत्येक इच्छा का अनादर करता हैं ।

लडकियाँ (लघु उपन्यास) : ममता कालिया के इस उपन्यास में मुंबई जैसे महानगर में अकेली रहने वाली प्रबुद्ध और अविवाहित कामकाजी लड़कियों के मर्मस्थल की रिपोर्ट प्रस्तुत करती हैं । इसके अतिरिक्त विज्ञापन जगत में चल रहे प्रतियोगिता, महानगर में बढ़ती महंगाई, आवास, पानी की समस्या, बिजली की परेशानी आदि बातों पर भी दृष्टिक्षेप किया गया हैं । नारी की अतरंग गहराई, परेशानी, मानसिक द्वंद्व, बेचैनी और आत्मविश्वास का भी बड़ा ही सजीव और यथार्थ चित्रण हैं । इस उपन्यास में नायिका अपने प्रतिभा और काबिलियत के द्वारा अपने गंतव्य तक पहुँचने में दृढ़ विश्वास रखती हैं । अकेली होकर भी वह शौर्य और पराक्रम से परिस्थितियों का कड़ा मुकाबला कर अपने सहयोगी की सुरक्षा करने का कड़ा दुस्साहस करती हैं । इस रचना में एक प्रबुद्ध नारी की मानसिकता को उजागर करने का सफल प्रयास दिखाई देता हैं ।

विजन (उपन्यास) मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित इस उपन्यास में चिकित्सा जैसे बौद्धिक क्षेत्र में काम कर रही स्त्रियों की इस क्षेत्र के पुरुषों द्वारा होने वाली अवहेलना को उजागर करना विजन उपन्यास का उद्देश्य हैं । डॉ. आभा तथा डॉ. नेहा शरण के माध्यम से लेखिका ने यह बताना चाहा हैं, कि वास्तव में स्त्रियों में बौद्धिक क्षमता की कोई कमी नहीं होती बौद्धिकता में वे पुरुष को भी पीछे छोड़ सकती हैं । वर्तमान में विभिन्न परीक्षाओं के फल इसका प्रमाण हैं । परंतु इसमें पुरुष समाज बौखला सा गया हैं । जीवन की होड़ में पीछे पिछड़ जाने के डर से वह स्त्रियों को हर प्रकार से पीछे धकेलना चाहता हैं । कभी उस पर जबरदस्ती मातृत्व लादकर तो कभी उसे अवसर से वंचित करके और कभी अपने पद का दुरुपयोग करके लेकिन स्त्रियाँ हर चुनौती को स्वीकार करने में सक्षम हैं ।

मैं, फूलमती और हिजड़े (कहानी संग्रह) : उर्मिला शुक्ला द्वारा लिखित इस कहानी संकलन में उन्होंने स्त्री की पीड़ा और उसके जीवन की विडंबनाओ के व्रत में खामोशी से प्रवेश किया हैं । लेखिका की संवेदना मध्यवर्ग और श्रमजीवी वर्ग के प्रति विशेष रूप से हैं । मध्यवर्ग की पढ़ी–लिखी साधन संपन्न स्त्री की त्रासदी और उसके जीवन की विडंबनाओ को वे विश्वसनीयता से व्यक्त करती हैं । कथा नायिका सीमा शर्मा और फूलमती की जीवन दृष्टि में स्वायत्तता हासिल करने के ताप और साहस में खास अंतर हैं । पढ़ी–लिखी नौकरी पेशा होकर भी सीमा अपने पति के गर्हित इरादे और व्यवहार का सीधा विरोध नहीं कर पाती । पति अपने व्यावसायिक लाभ के लिए पत्नि का इस्तेमाल करना चाहता हैं । श्रमजीवी औरतें तो एक और गरीबी की मार को झेलती हैं और दूसरी और पुरुष की वर्चस्ववादी प्रवृत्ति को भी । उर्मिला का जोर पुरुष द्वारा रचे गए प्रवंचनापूर्ण वितान के बीच स्त्री को चित्रित करने पर हैं ।

सिलिया (कहानी) : सुशीला टाकभौरे द्वारा लिखित यह विशिष्ट कहानी हैं । कहानी की नायिका सवर्ण पुरुष मानसिकता को पहचानकर अन्याय अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती हैं । नकार की भूमिका में खड़ी होकर वह संवेदनहीन सवर्ण मानसिकता को शर्मसार कर देती हैं । सिलिया आत्मसम्मान की उष्मा से पिघलती हीनता की बर्फ की कथा हैं । सुशीला टाकभौरे लिखित

सिलिया कहानी में यह दिखाई देता हैं, कि आजादी के बाद का दलित समाज स्त्रियों के पढ़ने पर अब जोर दे रहा है। यदि उन्हें पढ़ने का अवसर दिया जाए तो वह अपनी योग्यता स्थापित कर सकती हैं ।

अकेली (कहानी) : मन्नू भंडारी द्वारा लिखित इस कहानी में बूढी सोमा बुआ जो बहुत अकेली और परितक्त्या हैं । सोमा बुआ अपना एकमात्र जवान बेटा खो चुकी हैं और पति भी । बेटा मृत्यु का ग्रास हो गया और पति पुत्र शोक में सन्यासी हो गए हैं । उसके जीवन के अकेलेपन को दूर करने के लिए उसका अपना कोई सगा संबंधी नहीं हैं । यह कहानी सोमा बुआ के अकेलेपन के साथ–साथ संबंधहीनता की भी हैं । उसके पति ने संन्यास ले लिया था, उसका बुआ के साथ कोई प्रेम और भावनाओं का रिश्ता नहीं था । इस कारण जब साल में एक बार एक महीने के लिए घर आते तो वह समय सोमा बुआ के लिए प्रसन्नता का न होकर और भी कष्ट से भरा होता हैं । मन्नू भंडारी ने इस कहानी में स्त्री जीवन की अनेक विडंबनाओ के चित्र प्रस्तुत किए हैं । संबंधों के तनाव को अलग रूप में उभरा है । इस कहानी में मनु जी ने यह बात स्पष्ट की हैं कि मनुष्य में आत्मसम्मान होता है ,जिसके बिना उसके जीवन का कोई महत्व नहीं होता जिसके पास आत्मसम्मान नहीं हैं अथवा जिस किसी मजबूरी से उसे खोना पड़ता हैं, उसका जीवन बड़ा ही कष्टदायी होता हैं ।

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य में नारी की भूमिका विविधता से भरी हुई हैं । कई कहानियों ,कविताओं ,उपन्यासों और नाटकों में नारियों को महत्वपूर्ण और प्रभावशाली चरित्रों के रूप में प्रस्तुत किया गया हैं। वे अक्सर समाज में स्थान और पहचान की खोज में होती हैं, और अपने व्यक्तित्व और सामाजिक परिस्थितियों के साथ निपटने के लिए प्रेरित करती हैं। नारी को समाज में उच्च स्थान और सम्मान प्राप्त करने की लड़ाई और उसके अधिकारों की मांग इन साहित्यों में अक्सर दर्शायी जाती हैं । हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में नारी की कसमसाहट, छटपटाहट, कामकाजी नारी के दोहरी भूमिका आदि प्रश्नों को उकेरा हैं । स्त्री शक्ति की स्रोत होकर भी शक्तिहीन की तरह सब कुछ सह लेती हैं । उसपर अत्याचार होता हैं, शोषण किया जाता हैं, उसे केवल भोग्य वस्तु समझा जाता हैं । इन साहित्यों में सामाजिक, पारिवारिक और मानवीय जीवन का खोखलापन दिखाया हैं । नारी के प्रति देखने का दृष्टिकोण बदलने या मानसिकता बदलने और उसे मानव समझकर बराबरी का हक और अधिकार देना यही इन साहित्यकारों का आग्रह हैं । यहाँ हर साहित्य में नारी शोषण को दिखाया गया हैं, उसका शोषण का स्वरूप सिर्फ बदल रहा हैं । आधुनिक स्त्री जीवन चक्की में पिसती हुई वह गीत गा रही हैं, "अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो"

इस तरह हिंदी साहित्य के अंतर्गत अलग–अलग रूपों में नारी की भूमिका को वर्णित किया गया हैं । इन नारियों का जीवन सामाजिक तथा पारिवारिक स्तर पर ही अधिक मात्रा में दिखाया गया हैं । साहित्यकारों का नारी के भावों को स्पष्ट करना ही उनके साहित्य का उद्देश्य रहा हैं ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1) साठोत्तरी हिंदी कथा साहित्य : स्त्री विमर्श, डॉ. अनीता नेरे, डॉ. योगिता हिरे, शांति प्रकाशन, रोहतक, हरियाणा

2) बयान (हिंदी मासिक) अंक 85 , संपादक–मोहनदास नैमिशराय ,नई दिल्ली .

3) अक्षर पर्व(साहित्यिक–वैचारिक मासिक) अंक 05,संपादन– सर्वमित्र सुरजन ,नई दिल्ली .

4) कथाधारा –संपादक– डॉ. अनीता नेरे, डॉ. अशोक धुलधुले, जगतभारती प्रकाशन, दूरवाणीनगर, अलाहाबाद.

5) आधुनिक हिंदी कथा साहित्य, कालजयी हिंदी कहानी, संपादक –रेखा सेठी–रेखा उत्प्रेती